।। वैरागी को संवाद ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ वैरागी को संवाद ||

संताँ सुखरामजी म्हाराज ने,रामावत बेस्नु कहयो,
तुमाने भेष किण दिया,कन आपापंथी हो ||
तब संत सुखरामजी बोल्या ||
चोपाई ||
मेरो भेष आद को सामी || क्या कहुँ में तोई ||
जाँ दिन मांड घड़ी हे साहीब || पेल किया हा मोई ||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को बैरागी भेषधारी रामवत वैष्णवने पुछा की,आपको किसने वेष दिया या स्वयम्के मनमतसे पहन लिया । तब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले मेरा वेष आदिका है इसका मै तुझे क्या बताउॅ साहेबने जिस दिन सृष्टी उत्पन्न की उस दिन पहले प्रथम मुझे वेष देकर उत्पन्न किया ।

बेरागी कहयो || पेल तुमकूं क्या किया ||
पेल तो ओऊँ किया || ओऊँ से सारी उत्पत्त हे ||
सुखरामजी वाच ||
ओऊँ सब्द बिसन जो ब्रम्हा || आद बणाया सोई ||
क्हे सुखराम सुणो बेरागी || पछे माँ हे सब लोई ||२||

बैरागी बोला पहले तुम्हे ही वेष देकर उत्पन्न किया ऐसा कैसा बोलते हो । साहेब ने पहले तो ॐ को उत्पन्न किया व ॐ से सब सृष्टी उत्पन्न हुयी । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की सृष्टी निर्माण होने के पहले ॐ शब्द,विष्णु व ब्रम्हा उत्पन्न हुये व बादमे जिवोकी सब सृष्टी व सभी लोग उत्पन्न हुये । इसप्रकार जगत मे सृष्टी के लोग पैदा होने पहले ब्रम्हा उत्पन्न हुआ ।।।२।।

जेता भेष जक्त मे कहिये || सबे दुज सूं आया ||
के सुखराम सुणो बेरागी || आद रिख म्हे भाया ||

जितने वेष आज जगतमे है वे सब ब्रम्हाने उत्पन्न किये है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने बैरागीसे कहा की,मै ब्रम्हा पुत्र हुं और वेष मेरे पिता ब्रम्हासे याने मेरे घरसे निकले है । मतलब ब्रम्हाका पुत्र होने कारण पहले मै ऋषी बना व फिर जगतके लोग ऋषी बने ।।।३।।

बेरागी बोल्यो || आद मे तुम कहाँसे आये || आद मे तो पाँच तत्त बणे हे ||
पाँच तत्त के पहले कुछ नही था फेर पाँच तत्त के पहले तुम कहाँ से आये ||
सुखरामजी वाच ||
पाणी पवन धरण आकासा || नही हा जुण जमारा ||
के सुखराम सुणो बेरागी || ताँ दिन भेष हमारा ||४||

बैरागी बोला आदिमे पॉच तत्व आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी बनने के पहले आपको पाँच तत्व का देह कैसे मिला । पहले तो पॉच तत्व बने । पाँच तत्वके पहले तो पॉच तत्व का

कोई देह नही था फिर पॉच तत्वका देह तुम्हे कहॉसे मिला । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले पाणी,पवन,धरती,आकाश व अग्नी नही जन्मे थे उस दिन भी मुझे वेष था ।।।४।।

में हूँ रिष ब्रम्ह रिष जोगी ।। असल दुज का जाया ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। कळजुग संत कहाया ।।५।।

हे वैरागी मै ब्रम्हऋषी हूँ मै ब्रम्हजोगी हुँ व अस्सल ब्राम्हण के घर जन्मा हुँ । हे बैरागी कलीयुग मे मुझे ऋषी के जगह संत कहते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।५।।

मेरा भेष क्हा तूँ बूझे ।। जाणत हे जुग सारा ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। तीन लोक सिष म्हारा ।।६।।

मेरा वेष तु क्यो पुछ्ता,मुझे तो सब जगत जाणता है । हे बैरागी स्वर्ग,मृत्यु,पाताल ये सभी मेरे शिष्य है ।।।६।।

बेरागी बोल्यो ।। जक्त का गुरू तो ब्रम्हा हे, फेर तुमारा सिष जक्त केसे हुवा ।।

सुखरामजी वाच ।।

ब्रम्हा गुरू पिता हे मेरा ।। सिव उपदेस बताया ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। जन्म रिष म्हे भाया ।।७।।

बैरागी बोला इस जगत का गुरु ब्रम्हा है फिर ये जगत तुम्हारे शिष्य कैसे हुये?आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागी को बोले ब्रम्हा जो सभी जगत का गुरु है वही ब्रम्हा मेरा पिता है व जन्मते ही वैरागीका वेष मुझे आदि वैरागी महादेव ने दिया इसलिये मै जन्मसे ही ऋषी हुँ ।७।

षट द्रसण आ रिष की पदवी ।। असंख जुगाँ के माही ।।
के सुखराम पँथ अे द्वारा ।। कळजुग मध कहाही ।।८।।

हे वैरागी षट दर्शनकी ऋषी पदवी यह असंख्य युगोसे चलती आयी है परंतु तुम बता रहे हो यह पंथ व द्वार कलीयुग के पहले नही थे । कलीयुग मे अभी अभी निपजे है ।।।८।।

में बूझूँ अब कहो आप को ।। भेष क्हाँ सूं लाया ।।
के सुखराम दरसणी हो ।। कन पाखंड रूप कहाया ।।९।।

हे बैरागी मै तुम्हे ही पुछ्ता हुं तुमने यह वेष कहॉ से लाया? तुम दर्शनी याने आदि से चलते आये उन दर्शनी मे से हुये हो या बिना दर्शन के आधार पर पाखंडी रुप धारण किये हो ।।।९।।

बेरागी कहयो ।।

हम रामावत असल बेस्नव ।। पूजत हे सब लोई ।।
सुण सुखराम भेष सो मेरा ।। सकळ पंथ सिर होई ।।१०।।

बैरागी बोला मै रामवत अस्सल वैष्णव हुँ मुझे जगत के सभी लोग पुजते है । बैरागी ने

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहाँ की मेरा वेष सभी पंथोके सिरपर है वह कैसे है यह तुम सुनो ।।।१०।।

च्यार सँप्रदा बावन द्वारा ।। जाँ मे फेर बसेखा ।।
सुण सुखराम कील का द्वारा ।। सबे भेष को टीका ।।११।।

संसार मे रामानंद,निमानंद,श्रीवैष्णव,माधवाचार्य ऐसे चार संप्रदाय और बावन द्वार है उस सभी मे विशेष श्रेष्ठ किलजी का द्वार है उस किलजी के द्वार का मै हुँ ।।।११।।

सुखरामजी वाच ।।

च्यार सँप्रदा बावन द्वारा ।। अग्रदास ठेराया ।।
के सुखराम तठा सुण आगे ।। कोण बिध थी भाया ।।१२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने बैरागी से कहा चार संप्रदाय व बावन द्वारा अग्रदास ने बनाये । इस अग्रदास के पहले कौनसी विधी थी यह तुम मुझे बतावो ।।।१२।।

रामानंद परे नही द्वारा ।। भक्त ब्रण मे होई ।।
के सुखराम मुनि रिष जोगी ।। द्रसण बिना ना कोई ।।१३।।

रामानंदके पहले कोई द्वार नही था । जो भी भक्त हुये वे ब्राम्हण वर्ण मे हुये । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले पहले जितने ऋषी मुनी हुये वे इन ब्राम्हण वर्ण के सिवाय कोई भी नही हुये ।।।१३।।

बेरागी ।। षट द्रसण बिणा च्यार संप्रदा मे केई भारी भारी भक्त जक्त मे हुवा हे ।।

सुखरामजी वाच ।।

जे कोई भक्त हुवो जुग भारी ।। बरण छोडीयो नाही ।।
के सुखराम भेष ओ अब्रण ।। चल्यो कलुगत माही ।।१४।।

बैरागी बोला षटदर्शन के सिवाय चार संप्रदायमे कअी भारी भारी भक्त जगत मे हुये है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीको बोले की इस जगत मे कितना भी भारी भक्त हुआ तो भी उसने दर्शनी ब्राम्हण वर्ण छोडा नही । दर्शणी वर्ण त्यागकर यह अवर्ण वेष कलियुग मे शुरु हुवा है ।।।१४।।

च्यार संप्रदा बावन द्वारा ।। अग्रदास ठेराया ।।
रामानंद उरे बेरागी ।। तीन पीढियाँ भाया ।।१५।।

हे बैरागी चार संप्रदाय बावनद्वारा अग्रदास ने निश्चीत किये । हे बैरागी यह अवर्ण बैरागी वेष धारणा यह रामानंद के इन तीन पीढीसे ही शुरु हुआ है पहले नही था ।।।१५।।

अब्रण भेष भगत सुद्राँ मे ।। रामानंद सूं आई ।।
के सुखराम तठा सुण आगे ।। भेष दरसणा माई ।।१६।।

यह अवर्ण वेष रामानंद से हुआ है । शुद्र मे भक्ती रामानंद से ही आयी है ।(षटकोप योगी यह सूप करनेवाला बुरड था और मुनीवाहन यह चांडाल था । यावानाचार्य यह जाती का यवन (मुसलमान)था । ऐसा दयानंद सरस्वतीने अपने सत्यार्थ प्रकाश पुस्तकमे एकादश

समुल्लास मे बताया है) इनके पहले यह वेष छः दर्शनोमे ही था ।।।१६।।

जे कोई भक्त सुद्र मे हूवो ।। तोइ दरसण के आसे ।।
के सुखराम अबे बेरागी ।। बेईमान व्हे न्हासे ।।१७।।

यदी कोई शुद्र वर्णमे भक्त हुआ तो भी वह दर्शनोके आश्रय से ही हुआ । बैरागी सुण तुम बैरागी हमारे आसरे से हुये हो व आज हम ब्राम्हण वर्ण से तुम बेइमान होकर दुर भागते हो । ।।१७।।

बेरागी ।। शुद्राँ मे भक्ति कद से आई ।। सुखरामजी वाच ।।

बारासे ओ समत बाणवे ।। भक्त सुद्राँ में आई ।।
के सुखराम गोत द्रसण सूं ।। न्यारी राहा चळाई ।।१८।।

बैरागी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को पुछा की शुद्रोमे भक्ती कबसे आयी? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले विक्रम संमत १२९२ मे शुद्र भक्ती आयी तबसे शुद्र ब्राम्हण दर्शन से अलग ऐसे अपने शुद्र वर्ण मे भक्ती चलाने लगे ।।।१८।।

आगे रिषी जोगेसर हूँता ।। रामानंद बिन सोई ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। जब तो ओर न कोई ।।१९।।

पहले ऋषी जोगेश्वर वे सब रामानंदके पहले ही हो गये । तब चार संप्रदाय का और बावन द्वार का कोई भी संबंध नही था ।।।१९।।

बेरागी रिस खायने ऊठ कर जाणे ने लागो ।। तब सुखरामजी म्हाराज बोल्या ।।

तब मुरड़ाय रीस कर चाल्या ।। छाड़ो भवन हमारो ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। मन मुख भेष तुमारो ।।२०।।

बैरागी मुरडायकर रिस खाकर उठकर जाने लगे तब सुखरामजी महाराज बोले तुम रिस खाकर ,खिजकर मुरडाय कर मेरा भवन त्यागकर चले मतलब तुम गुरुमुखी नही हो गुरुमुखी रहते तो तुम्हे खिज नही आती । इसका अर्थ तुम मनमुखी हो तुम्हारा वेष भी गुरुमुखी नही है तुम्हारे मन का है ऐसा तुम्हे खिज आनेवाले स्वभाव से लगता ।।।२०।।

सुणले बरस च्यार से हूवा ।। अब्रण भेष कहाई ।।
के सुखराम तठा सुण आगे ।। सबे हमारे माई ।।२१।।

अरे बैरागी सुन अवर्ण वेष शुरु होनेको सिर्फ चार सौ वर्ष हुये है उससे पहले सभी ब्राम्हण वर्ण के थे ।।।२१।।

बे मुख हुवा ताँके सुण कारण ।। दर्सण कहे न कोई ।।
के सुखराम भेष तुम पासे ।। सबे हमारो होई ।।२२।।

तुम ब्राम्हण वर्ण से बेमुख होने कारण तुम्हे कोई भी दर्शन है ऐसा कहता नही । अरे बैरागी यह जो तुम्हारे पास वेष है वह सब हमारा ही है ।।।२२।।

बेरागी वाच ।। हमारे पास तुमारा भेष कोणता हे ।।

सुखरामजी ।।

बैरागी बोला, हमारे पास,तुम्हारा वेष कौनसा है ।

डंड कमंडल सनका दिक डाढी ।। माळा तिलक जनोई ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। आद हमारी होई ।।२३।।

बैरागी बोला हमारे पास तुम्हारा वेष कौनसा है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागी से बोले यह दंड,कमंडूल,सनकादिक याने सिर के उपर की जटा,दाढी,माला,तिलक जनेउ यह वेष पहलेसे हमारा है ।।।२३।।

पोथी ग्यान अरथ अर च्रचा ।। भेद बेद सुण सारा ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। अे हे सबे हमारा ।।२४।।

यह पोथी मुखसे पोथी का ज्ञान कथ रहे हो यह ज्ञान कथन उसका अर्थ चर्चा तथा वेद भेद यह जो तुमने धारा है यह वेष आदिसे हमारा वेष है ।।।२४।।

ओऊँ सोहँ ररो ममो ओ ।। गायत्री सुण भाई ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। अे हम पेल बणाई ।।२५।।

आदि प्रथम ओअम् सोहम,रामनाम,गायत्री यह सब ज्ञान हमने किये है मतलब मेरे ब्रम्हा पिता ने उत्पन्न किये है ।।।२५।।

मंतर जंतर सासा साझन ।। बावन अंछर जीया ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। घड पेदा हम कीया ।।२६।।

आदि प्रथम मंत्र,यंत्र,ओअम सोहम अजप्पा इन सांसोकी साधना बाबत अक्षरो का सभी ज्ञान हमने पैदा किये ।।।२६।।

संख जोग ओर भक्त भेष रे ।। आदू दुज बणाया ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। तुम कहाँ सुं लाया ।।२७।।

सांख्ययोग व सर्व भक्त वेष सबसे पहले ब्रम्हाने बनाया हे बैरागी तुमने यह वेष कहॉसे लाया । ।।२७।।

चीजाँ सबे तुमारे पासे ।। सो पेदा कहाँ होई ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। अरथ बतावो मोई ।।२८।।

तुम्हारे पास दंड,कमंड्लू,सनकादिक,माला,टिलक,जनेउ,पोथी ज्ञान आदि जो चिंजा है वे चिजा कहॉ से पैदा हुयी यह मुझे खोजकर बतावो ।।।२८।।

द्रसण बिना कहाँ सूं लाया ।। नाँव भेष बिध सारी ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। कहोनी भेद बिचारी ।।२९।।

दर्शनोके सिवाय नाम व वेष आदि चिजे तुमने कहॉसे लाई यह तुम मुझे सोच समजकर विचार कर बतावो ।।।२९।।

भूलो मती मूळ घर देखो ।। बस्त कहाँ सूं आई ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। समज सोच मन माई ।।३०।।

तुम चार संप्रदाय व बावन द्वारोसे ये वेष वस्तु आयी इस भ्रममे भुलो मत । तुम इन चिजोका मुळ घर देखो की जगत मे ये वस्तु कहाँसे आयी । तुम मन मे समझकर विचार करो की,ये वस्तु हमारे सिवाय कही से आयी है क्या? आयी नही ।।।३०।।

बेरागी ।। ये तुमारे सें क्या ।। सब अे ब्रम्ह से पेदा हे,
ब्रम्ह बिना तुमने कहाँ से लाये सो बतावो ।।

सुखरामजी म्हाराज ।।

जात पाँत हम ब्रम्ह कही जाँ ।। तूं सिंवरत हे सोई ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। कहा बुझसी मोई ।।३१।।

बैरागी बोला ये वस्तु तुमसे कैसे उत्पन्न हुयी । ये सभी वस्तुये तो ब्रम्हसे उत्पन्न हुयी । ब्रम्ह के सिवाय तुमने भी कहाँसे उत्पन्न की यह मुझे बतावो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले तुम ब्रम्ह ब्रम्ह कह रहे हो तो हमारी सभी मुळ जाती पाती ब्रम्ह ही है और तुम जिस ब्रम्ह का स्मरण करते हो वह ब्रम्ह भी मै खुद हुँ फिर मुझे त्यागकर तुम निराले ब्रम्ह को कैसे भजोगे ।।।३१।।

बेरागी रिसमे आय कर बोल्यो ।। हाँ हम तुमारे कुं ग्रहके फंदमे फंदे हुवे कुं सिंवरता हूं ।।
हम तो त्यागी हे।माया के बाहीर गृह बोहार जगत से न्यारे हे। तुम तो ग्रस्ती हा

सुखरामजी महाराज ।।

त्यागी होय कोप मत स्वामी ।। बस्त ग्रुह सु आई ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। अरथ सोझ ऊर माई ।।३२।।

बैरागी रिसमे आकर बोला हॉ हॉ मै तुम्हारा स्मरण करता हुँ । तु तो संसारके फंदे मे फँसे हुये हो । हम तो त्यागी है माया के बाहर है । हम गृहस्थी व्यवहार व जगतसे न्यारे है फिर मै तुम्हारा स्मरण करता हुँ यह तुम कैसे बोल रहे हो । तब आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी को कहा की तुम त्यागी बने हो इसलीये गृहस्थी पे रिस मत करो । तुम्हारा देह माता पिता के अस्सल गृहस्थी से ही जन्मा है या नही इसका हृदय मे खोज कर देखो ।।।३२।।

ग्रुह सुई आप निसऱ्या सामी ।। नाव ग्रुह सुं लाया ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। निंदे मती अब भाया ।।३३।।

तु गृहस्थ से ही निकला है(तो माँ बाप गृहस्थी ही थे)और तु तेरा नाम भी गृहस्थपन से ही लाया है(तेरा नाम भी गृहस्थीपन मे ही रखा था,वह नाम लेकर तू बैरागी बना)तो बैराग्या सुन,तू इस गूहस्थपन की निंदा मत कर(तु इस शिरजणहार का(सृष्टी कर्ता का)स्मरण करता है,तो(शिरजणहार)वह ग्रहस्थी है,क्यों कि ,उसने सब सृष्टी पैदा कि ,वह ग्रहस्थी नही क्या? तुम गृहस्थी से निकले है,तुम्हारा नाम भी गृहस्थीपन मे ही रखा गया,वही नाम तुम्हारा है,तो तू गृहस्थीपनकी निंदा मत कर,तुझे अभी भी रोटी,गृहस्थी के घरसे ही मिलती है ।।।३३।।

ग्रुह की काया ग्रुह की माया ।। ग्रुह का सबद पसारा ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। कोण ग्रुह सुं न्यारा ।।३४।।

यह तेरी काया गृहस्थ मे ही पैदा हुयी है और यह सब माया गृहस्थ की ही है और यह शब्दोका पसारा सब गृह का ही है तो बैराग्या सुन,इस गृह से अलग कौन है ।।।३४।।

ग्रुह मे जन्मे ग्रुह कूं निंदे ।। सो दरगा का खूनी ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। क्हे गया संत अजूनी ।।३५।।

तू ने गृह मे ही जन्म लिया और गृह की ही निंदा करता इस कारण से तु दर्गा का अपराधी है । बैराग्या सुन जो अयोनी(योनी मे न आनेवाला)संत हुवे वे यह सब बात बताकर गये ।।।३५।।

ये बात सुण के बेरागी दुःखी हो गया । और रिंस खाय ऊटकर जाण ने लागो ।

तब सुखरामजी म्हाराज बोल्या ।।

चरचा माय दुःख जो माने ।। सो नर मुढ गिंवारा ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। निर्भे ग्यान हमारा ।।३६।।

यह बात सुनकर बैरागी दुःखी हो गया और गुस्से से उठकर जाने लगा तब आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले जो ज्ञान चर्चा की बातें करनेमे दुःख मानते वे मनुष्य मुर्ख गवार है तो बैराग्या सुन यह हमारा निर्भय ज्ञान है ।।।३६।।

तामस करी ऊठ जे जावे ।। जाँ गुर ग्यान न पाया ।।
के सुखराम तके बेरागी ।। उडत ग्यान ले आया ।।३७।।

जो क्रोध लाकर उठकर जाता उसे गुरु के पास से ज्ञान मिला नही तुम बैरागी उपर उपर का उड्ता हुवा ज्ञान लेकर आये हो(इसलीये तुम्हें क्रोध आता) ।।३७।।

सतगुर मिल्या ग्यान ले आयो ।। फिर तम संत कहासो ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। ऊठ ऊठ मत न्हासो ।।३८।।

तुम सतगुरु का ज्ञान प्राप्त करोंगे तब संत कहलाओंगे । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ने बैरागी को कहा उठ उठ कर भागो मत ।।।३८।।

बेरागी ।। तुम हमारी तो सुणतेई नही ।। हमारा भी ग्यान सबद सुणो तो बेटे ।।

सुखरामजी म्हाराज ।।

कहोनी ग्यान तुमारो सामी ।। साख सबद मुख बोलो ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। ग्यान हाट क्युंनी खोलो ।।३९।।

बैरागी बोला तुम हमारी तो बात कुछ सुनतेही नही हमारा भी ज्ञान व शब्द(पद)सुनोंगे तो बैठता हुँ । सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,स्वामी तुम भी तुम्हारा ज्ञान कहते क्यों नही, तुम्हारी साखी और तुम्हारे शब्द मुँहसे बोलो तो बैरागी तुम सुनो तुम तुम्हारा ज्ञान का दुकान क्यो खोलते नही ? तुम तुम्हारे ज्ञान का दुकान खोलो ।।।३९।।

में कहुं ग्यान सुणो गा सामी ।। कन नही चित्त तुमारो ।।

के सुखराम जाब ओ दीजे ।। ज्यूँ दिल खुले हमारो ।।४०।।

नही तो मै ज्ञान कहता हुँ वह सुना । तुम्हारा चित्त हमारा ज्ञान सुनने मे है या नही इसका मुझे जबाब दो । तुम्हारा ग्यान सुननेमे चित्त रहेगा तो मेरा भी ज्ञान खोलने मे मन खुलेगा ।।।४०।।

अरथां बिना उथापे चरचा ।। सो मन मुखि कहावे ।।

के सुखराम सुणो बेरागी ।। दरगे दाद न पावे ।।४१।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीसे बोले तुम हमारी ज्ञान चर्चा का अर्थ जाने बिना ही पलटा देते हो । यह गुण तो गुरु मुखी साधू मे नही होता यह गुण तो मनमुखी साधू मे रहता । इस प्रकार के मनमुखी स्वभावके साधु को दर्गामे कभी जगह नही मिलती ।।।४१।।

बेरागी ।। हमारा सत्त सब्द अरथ सुणे बिना मन मुखी केसे बताते हो ।।

हमारा गुर मुखी सत्त सब्द का अरथ तो सुणते ही नही ।।

सुखराम जी म्हाराज ।।

क्हो सत्त सब्द अरथ सो कीजे ।। पांख पांख को सारो ।।

के सुखराम अरथ बिन बकबो ।। दोटे दड़ी बिचारो ।।४२।।

बैरागी बोला मेरे सतशब्दका ज्ञान सुने बगैर तुम मुझे मनमुखी कैसे बताते हो । मेरा गुरुमुखी सतशब्दका ज्ञान तो तुम सुनते ही नही ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजको बैरागी बोला । तब सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले तुम्हारा सतशब्द बतावो । तुम्हारे ज्ञानका पाकली पाकलीका अर्थ समझावो । तुम अर्थ समझे बिना बकते हो वह गेंदको टोला मारता है । (गेंद को टोल्या मारनेसे वह चेंडू ,निशानेपर लगता नही,जहाँ चाहे वहाँ गेंद जाता है ।)इसप्रकार से तुम्हारा ज्ञान,अर्थ जाने बिना,जैसा गेंद निशानेपर लगता नही(ऐसा ही तुम्हारा ज्ञान निशाणेपर लगता नही ।।।४२।।

चरचा माँय पडयाँ जे अड़बी ।। रूठ ऊठ जे जावे ।।

के सुखराम साध वो नाही ।। हर कुं नाँह सुहावे ।।४३।।

चर्चा करनेमें कोई बात अड गयी तो रुठ रुठ कर उठ जाते है । ऐसे रुठ रुठकर उठ जानेवाले को कोई साधू नही कहता और वह रामजी को प्यारा भी नही लगता ।।।४३।।

अेक दोय दिन चरचा करके ।। जीऊं तिऊँ कर सुळझावे ।।

के सुखराम साध सो पूरा ।। भूला राहा लगावे ।।४४।।

कोई बात अड गई है तो उस बातपे अड्के न बैठते न्यायसे हिल मिलकर जैसे वैसे कोशिश करके सुलझानी चाहिये । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है की,सच्चे साधू तो वो है जो भूले हुये को रास्तेपर लगाते है । जो भुले हुये को रास्ते पे नही लगाते वे अपुरे साधू है याने पुर्ण वैराग्य विज्ञान पाये हुये साधू नही है । बैरागी वेष पहनकर मायामे अटके हुये साधू है ।।।४४।।

ग्यान ध्यान सिंवरण जप सासा ।। दोड़ त्रगुटी ताई ।।
के सुखराम तठा सुण आगे ।। कोण पद कठे जांई ।।४५।।

बैरागी को आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले तुम जो ज्ञान,ध्यान स्मरण जप व श्वास के साधना आदि विधीयाँ कह रहे हो वे सभी विधीयाँ त्रिगुटी तक के पहुँच की ही है भृगुटी तक ही है त्रिगुटी के परे की नही है । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीसे कहते है की त्रिगुटी(भृगुटी)के आगे कौनसा पद है और वह कहाँ जायेगा इसका तुम मुझे खुलासा करो । ।।४५।।

बेरागी ।। तुम त्रगुटी के अगाड़ी काँहाक जावो गे ।।
ओर क्या साझना करके जाते हो ।। वो तुमारा ग्यान बतावो ।।

सुखरामजी म्हाराज ।।

सुण बेरागी ग्यान हमारो ।। राम सब्द कुं ध्याऊँ ।।
के सुखराम अजपो जाग्यो ।। ऊलट आद घर जाऊँ ।।४६।।

बैरागी बोला तुम त्रिगुटीके आगे कहॉ जाओंगे और कौनसी साधना करके जाते हो यह तुम्हारा ज्ञान मुझे बतावो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागी को बोले की हे बैरागी तुम मेरा ज्ञान सुनो । मै राम शब्द को ध्यावंता हुँ । इस जिभके राम शब्द के स्मरण से मेरे घटमे जपने मे नही आता ऐसा अखंडित अजप्पा याने सतशब्द जागृत हुआ है । यह सतशब्द याने अजप्पे के बल से मै जहाँ माया नही है सिर्फ ब्रम्ह ही ब्रम्ह है ऐसे आदि घर जाता हुँ ।।।४६।।

बेरागी ।। अजपा क्या होता है ।। राम तो सब ही सिंवरते हे ।।
तुमारा राम सब्द न्यारा हे क्या ।। वे राम सब्द कैसा हे सो कहो ।।

सुखरामजी म्हाराज ।।

बावन परे तीन गुण बारे ।। सुरत सब्द सूं न्यारो ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। सो सत्त सब्द हमारो ।।४७।।

बैरागी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को बोल्या यह अजप्पा(जो जपनेमे नही आता वह सतशब्द)क्या होता है?रामनाम का स्मरण तो सभी साधू करते है फिर तुम्हारा राम शब्द अन्य साधू रामनाम रटते उससे अलग है क्या?अलग है तो वह राम शब्द कैसा है यह मुझे बतावो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज वैरागी से बोले हमारा राम शब्द बावन अक्षरोके परे है । हमारा राम शब्द रजोगुण ब्रम्हा,सतोगुण विष्णू,तमोगुण शंकर इन तीन गुणोके परे है । हमारा राम शब्द सुरत से परे है व जगत जो राम जपता है या अन्य कोई भी शब्द जपता है उन जो सभी शब्दोसे न्यारा है । ऐसा यह मेरा शब्द सत है । यह मेरा शब्द जागृत अवस्था निद्रा अवस्था,सुषुप्ती अवस्था मन चित्त,बुध्दी,सुरत,समज के परे कभी न मिटनेवाला शब्द है । इस शब्द को पुरे साधू सतशब्द कहते है ।।।४७।।

रसना सेव थकी हे मन की ।। जीव भजन सुं लागो ।।

के सुखराम सुणो बेरागी || भ्रम हंस को भागो ||४८||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीसे बोले जीसकी रसना स्मरण करनेमे थक जाती,मन रसनाको स्मरण मे लगन लगाने मे थक जाता व जीव स्मरण करनेमे अखंण्डीत लग जाता तब हंस को हंस के मुखसे जपनेवाला राम व बिना मुखसे परन्तु हंस से जपे जानेवाला राम इसका अंतर समजता यह विधी प्रगट होने पे अजप्पा याने सतशब्द यह मुखसे जपे जानेवाले रामशब्द से राम अलग है । यह तुम्हें समजेगा । यह समजने पे मुख से जपे जानेवाला राम जीव से जपे जानेवाले राम से अलग नही है यह आजतक का तुम्हारा भ्रम मीट जायेगा ।।।४८।।

रसना सेव थके जब मन की || जीव भजन सुं लागे ||
के सुखराम पारख वाँ की || ध्यान सुखमणा जागे ||४९||

जिसकी रसना थक गई,स्मरणमे लगन लगानेवाला मन थक गया व जीव भजन से लग गया ऐसे साधूके घट मे ध्यान समय सुषमना चलती है । हे बैरागी जीव भजन मे लगनेवाले साधूकी यह परिक्षा है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।४९।।

बेरागी || ये तुमारा सत्त सब्द क्या हे सो कहो ||

सुखरामजी ||

अर्था परे समज के आगे || गम सेन के बारा ||
के सुखराम सुणो बेरागी || सो सत्त सब्द हमारा ||५०||

बैरागी बोला तुम्हारा यह सतशब्द क्या है यह मुझे बतावो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले मेरा सतशब्द चार वेद छःशास्त्र,अठरा पुराण आदि ज्ञानके परे है । ज्ञानी ध्यानी नर नारी व तुम जहाँ तक ज्ञान समजते हो उस समजके परे है । ज्ञानसे शब्दोमे समजाते आता उस ज्ञानके समजाने के परे ऐसा मेरा सतशब्द तुम्हें समजेगा । ऐसी कोई माया की वस्तु से समजाने के बाहर है ।।।५०।।

सोहँ परे अजपे आगे || थके अनाहद लारा ||
के सुखराम नाद सुंई आगे || हे सत्त धाम हमारा ||५१||

मेरा सतस्वरुप सतशब्द अजप्पा या सोहम व पारब्रम्ह अजप्पा के परे है । अनहद शब्द यह भी उले है परे नही है । यह मेरा सतशब्द नाद शब्द के भी आगे है । यह सतशब्द पारब्रम्ह के परे के सतस्वरुप सत्तधाम मे रहता उसी सत्तधाम मे मै बिराजता हुँ ।।।५१।।

बेरागी || तुमारा सत्त धाम कहते हो, सो कहाँ हे सो कहो ||

सुखराम जी ||

चवदे धाम फेर इक्किसूं || बेहद परे मुक्कामा ||
के सुखराम तठा सुण आगे || केवळ पुरस को धामा ||५२||

बैरागी बोला यह तुम सत्तधाम कहते हो वह सत्तधाम कहॉ है यह तुम मुझे बतावो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,यह मेरा सत्तधाम एकवीस स्वर्ग,चौदा भवन,बेहद के

तीन ब्रम्ह के परे है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीसे बोले इसप्रकार हद व बेहद के आगे केवल पुरुष का धाम है वहा मै रहता हुँ ।।।५२।।

लोकां परे भवन सूं आगे ।। ग्यान ध्यान सूंई बारा ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। वाँ सत्त बास हमारा ।।५३।।

यह मेरे केवल पुरुष का सत्तधाम तीन लोग चौदा भवन के परे है । वह त्रिगुणी माया के ज्ञानसे समजने के बाहर है ।।।५३।।

सुणने परे देखणे आगे ।। सुरत दोड़ सूं बारा ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। वाँ सत सब्द हमारा ।।५४।।

सत्तधाम मे गरजनेवाला सतशब्द माया के सुनने के परे है व सत्तधाम चर्मचक्षु से देखने के परे है । वह सतशब्द सुरत के दौड के परे है ।।।५४।।

बेरागी ।। तुमारा सत्त सब्द वो कैसा हे सो कहो ।।

सुखरामजी म्हाराज ।।

पाँचा परे पची सु आगे ।। रेण केण सुंई न्यारा ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। वो सत्त सब्द हमारा ।।५५।।

बैरागी बोला,तुम्हारा वह सत्तशब्द कैसा है वह मुझे बतावो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले मेरा सत्तशब्द आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी इन पाँच तत्व व पच्चीस प्रकृती से न्यारा है । जगत मे जो जो मायावी विधीयाँ पर्चे चमत्कार प्रगट रहती है या ज्ञान से कथे जाती है उन सभी विधीयोसे न्यारा है ।।।५५।।

पाँचुं बसे देहे के आसे ।। देहे पवन आधारा ।।
के सुखराम पवन जिण टेके ।। सोई सब्द हमारा ।।५६।।

पाँचो तत्वो के पाँचो ज्ञान देह के आसरे है । देह यह श्वास के आसरे है व श्वास सतशब्द के टेके पे है वह सतशब्द मेरा है तब बैरागी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से बोला मै भी श्वास जिस शब्द के आधार पे टिका है उसी शब्द का मै भी स्मरण करता हुँ ।।।५६।।

पवन रहे तीके सुण टेके ।। सोई सबद हे ऊला ।।
के सुखराम तठां लग सिंवरे ।। सोई सकळ नर भूला ।।५७।।

तब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले पवन जिसके आधार से बना है वह पारब्रम्ह शब्द भी मेरे सतशब्द के आधार से टिका है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की ऐसे पारब्रम्ह शब्द का जो जप करते है वह सभी मनुष्य भुले है ।।।५७।।

जेता सब्द जीभ पर आवे ।। सुरत समज सूं जाणे ।।
के सुखराम तठा लग माया ।। काचा जीव बखाणे ।।५८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की,जो भी शब्द जिभ से बोले जाता या कर्णसे

समजे जाता या सुरतसे लखे जाता तबतक वह शब्द विज्ञान वैराग्य नही है कालके मुखसे रखनेवाली माया है । इस मायाकी कालके मुखमे अटके हुये कच्चे साधू महिमा करते । काल को जिते हुये पक्के साधू कभी नही करते ।।।५८।।

पेला सुरत समज मे जाणे ।। सो रसना जन गावे ।।
के सुखराम रटयाँ सूं साधो ।। प्रम पद जन पावे ।।५९।।

जो शब्द हंसके समजमे आता हंसके जीवसे बोले जाता हंसके सुरतमे पकडे जाता ऐसा मुखसे बोलनेवाला राम शब्द पहले जिभसे रटनेसे बिना जिभ से रटनेवाला सतशब्द बादमे घटमें आगे प्रगट होता और वह सत्तशब्द साधूको परमपद ले जाता ।।।५९।।

डेहेको मती साख सुण कोई ।। प्रम पद लिव माही ।।
के सुखराम रटन लिव आपे ।। प्रम पद ज्याँ जाई ।।६०।।

कोई ज्ञानी उंच पद की साखीयाँ सुणाता है तो वे साखीयाँ सुनकर उन साखीयोमे कोई भूलो मत । परमपद साखीयाँ सुनने से या रटनेसे नही मिलता । परमपद लिव लगाकर राम नाम रटनेसे मिलता । यह रामनाम रटनेकी लिव बिना किसी माया के आधार से हंस को परमपद पहुँचाती ।।।६०।।

आपे थके सेज मे कोई ।। तका बात हे साची ।।
के सुखराम मन कर छाडे ।। सोई सरब बिध काची ।।६१।।

जब हंस की जीभ से रटने की विधी अपने आपसे सहज मे थक जाती तब ही रसना थकना यह विधी सच्ची है यह समझो । परन्तु कोई रसना थके बिना मन से रटना छोड़ेगा उसकी रसना रोकने की विधी झुठी है यह जाणो ।।।६१।।

करताँ भजन थके जे माही ।। सो सब थकणे दीजे ।।
के सुखराम भजन बिन मन सूं ।। अेको बात न लीजे ।।६२।।

भजन करते करते रटने की जो भी विधी थकती है उसे थकने दो । रटना किये बिना एक भी विधी थकने की बात किसी की मानो मत ।।।६२।।

बुध मे बुध सुध मे सुध व्हे ।। तो चर्चा कर आई ।।
के सुखराम नही तो सामी ।। आ गत लखि न जाई ।।६३।।

तुम्हारी बुध्दीमे ज्ञान बुध्दी व सुध्दीमे ज्ञान सुध्दी है तो मेरे साथ चर्चा करो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है मैने तुम्हारे साथ कितनी भी चर्चा की तो भी तुम्हारे समजमे परमपद आयेगा नही ।।।६३।।

अरथाँ माँय अरथ जे जाणे ।। तो चरचा हल कीजे ।।
के सुखराम नही तो सामी ।। उलट जाब नही दीजे ।।६४।।

माया के ज्ञानसे न्यारा व परेका सतस्वरुपका उंडा ज्ञान समझना होगा तो तुम मेरे साथ चर्चा करेनेमे देर मत करो । यदी सतस्वरुपका उंडा ज्ञान नही समजता हो तो मुझे

उलटकर जबाब मत दो ।।।६४।।

आगे ग्यान ग्यान व्हे लारे ।। सो तो काँई न जाणे ।।
के सुखराम गम मे गम व्हे ।। सो कोई नेक पिछाणे ।।६५।।

जिसे पहलेसे ही सतस्वरुप पदका अज्ञान है व उसे सतस्वरुप ज्ञान बताने पे भी वह सतस्वरुप को न समजते मायावी अज्ञान ही प्रगट करता है तो उसे सतस्वरुप का ज्ञान कोई कैसे समजायेगा व समजाया तो भी उसे क्या समजेगा ? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जीसे सतस्वरुपी की मालुमात पहले भी कुछ है व समजाने के बाद सतस्वरुप की और समज खुलती है तो वह निश्चीत समजेगा ।।।६५।।

पढ पढ ग्यान अरथ सो सीख्या ।। ता कूं आ गम नाही ।।
के सुखराम साध क्या जोगी ।। अर्ध उरध के माही ।।६६।।

आदि हुये वे संतोका सतस्वरुपका ज्ञान सिख सिखकर ज्ञान धार लेते उनको सतस्वरुप का साधु क्या है सतस्वरुप का जोगी क्या है उसकी समझ कभी नही आती । जो साधू आते जाते सांसमे रामनामका रटन करेगा उसीको सतस्वरुप साधु या जोगी कैसे रहते यह अनुभव आयेगा ।।।६६।।

ज्याँ कर भजन आत्मा चीनी ।। ब्रम्ह खोज उर लीया ।।
के सुखराम तके जन मिलतां ।। रूम रूम हस दीया ।।६७।।

जिन संतोने रामभजन कर आत्मामे सतस्वरुप ब्रम्ह खोजा है ऐसे सतस्वरुप साधू मिलने पे जिसके रोम रोम खुषी होती है वही मनुष्य सतस्वरुपका ज्ञान समजेगा ऐसा बैरागीको आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।६७।।

देसी मिल्याँ हरप में पारख ।। अेक साख के माँही ।।
के सुखराम बिदेस लख के ।। चुपक बोलिये नाही ।।६८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीको बोले जैसे संसारमे मनुष्य को मनुष्य मिल जाने पे वह मनुष्य देशी है या विदेशी है यह शब्द बोलनेसे एक ही शब्दमे परिक्षा कर लेते है व देशी हुवा तो खुल खुलकर बोलते है व विदेशी हुवा तो कुछ न बोलते चुप हो जाते । ऐसे ही मै सतस्वरुप देशी हुँ व तुम सतस्वरुप देशी नही है होणकाल देशी है फिर मै तुमसे क्या बोलु । ।।६८।।

देसी मिल्याँ काय की चरचा ।। खुसी मगन व्हे रेणा ।।
क्हे सुखराम बिदेसी आगे ।। भाँत भाँत कर केणा ।।६९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीसे बोले देशी मिलनेपे कोई चर्चा नही रहती मनमे खुष व मगन होकर आनन्द मनाना रहता । परंन्तु विदेशी आगे उसका और अपना देश एक बनता नही तबतक भांती भांतीसे उस विदेशी को ज्ञान बताना चाहीये ।।।६९।।

जागत भजे नींद सुख मांही ।। सपने माँय लखावे ।।

के सुखराम तहाँ लग माया || मेरे दाय न आवे ||७०||

बैरागी बोला जागृत अवस्थामे,निद्रा अवस्थामे तथा सपना अवस्थामे मुझे भजनेका आनन्द सरीखा है । इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले यह भजनेका आनन्द माया है सच्चा सतस्वरुपका आनन्द नही है इसलीये यह तुम्हारा भजनेका आनन्द मुझे पसंद नही है । ||७०||

जागत परे सपन गत आगे || तुरिया परे बखाण्या ||
के सुखराम सुणो बेरागी || सोई सबद हम जाण्या ||७१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महराज बैरागी से बोले जागृत अवस्था के भी आगे स्वप्न गती के आगे और तुरीया अवस्था के भी आगे जो शब्द तुम बोले रहे हो वह शब्द भी मुझे मालुम है । मै उसके परेके शब्द की बात कह रहा हुँ ।||७१||

अष्टंग जोग जुगत कोई साझे || जाब जाप कोई गावे ||
के सुखराम प्रम पद परस्याँ || अे कोई दाय न आवे ||७२||

कोई अष्टांग योगकी युक्तीसे साधना करते है तो कोई अजप्पा जाप गाते है । परंन्तु जिसने परमपद पाया है उन्हेसे अष्टांगयोग,अजप्पा जाप जरासे भी पसंत नही आते ।||७२||

बेरागी || वो प्रम पद केसा हे || जिसका जाब दो ||
श्री सुखरामजी म्हाराज ||
क्या अब जाब कहुँ बेरागी || तुम तो या मुझ बुझे ||
के सुखराम प्रम पद अेसा || परस्याँ बिना न सुझे ||७३||

बैरागी बोला वह परमपद कैसा है इसका मुझे जबाब दो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीसे बोले तुझे परमपद कैसे है यह शब्दोंमे क्या जबाब दू । वह परमपद शब्दोंमे सुझता नही । परमपद देखनेसे ही सुजता ।||७३||

रूप न रेख रंग नही वाँके || अदभूत खेल कुवावे ||
के सुखराम सुणो बेरागी || क्याँ भेद नही पावे ||७४||

उस परमपदको रुप नही है रंग नही है तथा वह परमपद चित्रमे देखते आता ऐसा भी नही है । हे बैरागी परमपद बतानेसे तुझे उस परमपदका भेद मिलेगा नही ऐसा उसका अद्भूत खेल है । ||७४||

परस्याँ बिना प्रेम बिन बूझ्याँ || समज जाब क्या देसो ||
क्हे सुखराम कहुँ मे स्यामी || सब्द भेद किम लेसो ||७५||

हे बैरागी जैसे गृहस्थीका स्त्रि-पुरुषका सुख प्रेम आकर लिये बगैर सिर्फ सुनणेसे या पुछ्नेसे नही मिलता वैसे ही शब्द का सुख शब्द से प्रेम लाकर पाये बिना नही मिलता ।||७५||

में तो कही सुणी तुम सारी ।। ग्यान भेद सब दीया ।।
के सुखराम भेष तुम पेहरी ।। क्हा सही अब कीया ।।७६।।

मैने परमपद का जो जो ज्ञान बताया वह सभी ज्ञान व भेद तुमने सुना । अब तुम यह बतावो तुमने यह वेष पहनकर तुम्हारा क्या भला किया है ।।।७६।।

पेऱ्यो भेष जक्त ठग खायो ।। अंग कूं रहया फुलाई ।।
के सुखराम भजन बिन दरगा ।। क्या कहो गे जाई ।।७७।।

बैरागी तुम यह भेष धारण कर जगतको ठग ठगकर जगतसे पंचपक्वान खा रहे हो व शरीर को फुला रहे हो । परन्तु दर्गामे भजन किये बगैर संसारको ठग ठगकर खानेका क्या जबाब दोंगे । ।।७७।।

बेरागी । काळु जी महाराज ने कहा हे के । (साखी)
।। दोहा ।।
बानो बडो दयाल को ।। कंठी तिलक और माल ।।
जम उपरे काळु कहे ।। भय माने भूपाळ ।।
सुखरामजी म्हाराज ।।

टीका टोप कंठी अर माळा ।। पेर मगन मत होई ।।
के सुखराम भजन बिन जंवरो ।। तोड़ लेजासी तोई ।।७८।।

तब बैरागी बोला,कालुजी महाराज ने ऐसा दोहा बताया
बानो बडो दयाल को ।। कंठी तिलक और माल ।।
जम उपरे काळु कहे ।। भय माने भुपाळ ।।

इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले टिला लगाके व माथेपर टोपी पहन के और गले मे कंठी माला डालके तुम मन मे मगन मत हो । रामजीका भजन किये बिना यम तुझे तोड्के ले जायेगा ।

टोपी पाग जटा जुग मुंडत ।। षट द्रसण क्या लोई ।।
के सुखराम भजन बिन जंवरो ।। कारण रखे न कोई ।।७९।।

टोपी हुई तो क्या,सिरपर जटा होवे तो क्या,पगडी होवे तो क्या,मुंडित हुवे तो क्या,जगतके बराबर रहे तो क्या,या पटदर्शनी बने तो क्या भजन बिना यम तुम्हे ले जाकर न तोड्ने का , इन वस्तुका जरासा भी कारण नही रखेगा ।।।७९।।

बेरागी ।। थे कंठी तिलक माळा भगवा बस्तर ये सब हरी का बाना हे ।।
सुखरामजी म्हाराज ।।

हर के रंग रूप नही कोई ।। तुम बतावो बाना ।।
क्हे सुखराम झूट क्युँ बोलो ।। समझ चुपक रहो छाना ।।८०।।

तब बैरागी बोला,यह हमारी कंठी,टिला,माला और भगवे वस्त्र यह सब रामजीका बाणा है । इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले है बैरागी हरको रुप नही,रंग नही और तुम हरीका बाना है यह बताते हो । बैरागी तुम झुठ क्यो बोलते हो । बैरागी हरीको रुप

रंग कुछ भी नही है यह तुम मनमे समझो व समझके गुपचुप रहो व तुम्हारी यह बात मनमे छिपाकर रखो ।।।८०।।

बेरागी ।। हाँ हर के तो रंग रूप कुछ नही हे ।। परंतु यह बाना लेणाहे सो उसकी सरण लियाँ की सेनाणी हे ।। जैसा राज की चपरास और दरेस मुजब ।।

श्री सुखरामजी म्हाराज ।।

सरणो तके भजन मे राता ।। भेष पेरियां नाही ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। राम सकळ के माही ।।८१।।

बैरागी बोला हरीको तो रंग रुप कुछ नही है परन्तु जैसे राजाके चपरासी को बिल्ला व ड्रेस रहते वैसे यह बाना लेना यह हरीके शरणकी निशानी है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीको बोले हरीका शरणा भजनमे लिन रहने मे है । भेष पहनने मे है । भेष पहननेसे हरीका शरणा लिया ऐसा नही होता । राम तो सभीके घटमे विराजमान है,भेष पहनने वालोके घटमे है व बिना भेष पहने हुये के घटमे नही है ऐसा नही है ।।।८१।।

साहिब बसे तन के माँही ।। बारे किणी न पाया ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। गोत छोड़ क्यूं आया ।।८२।।

साहेब तो हर घट घटमे वास करता है । इसलीये सभीको साहेब घटमे ही मिला है । आजदिन तक बाहर भटककर साहेब किसी को भी मिला नही है व आगे भी मिलेगा नही । बैरागी तुम भटक कर तुम्हारे गोत याने माँ बाप भाई बहन इत्यादी कुटुंम्ब कें लोग छोड्कर क्यो भटकते फिर रहे हो ।।।८२।।

बेरागी ।। साहिब तन के मांही बताते हो ।। तो मिलता क्युँ नही ।।

सुखरामजी म्हाराज ।।

साहीब बसे तन के माँही ।। भजन कियाँ सूं पावो ।।
के सुखराम भेष तुम पेरो ।। किस कुं जाय रिझावो ।।८३।।

बैरागी बोला,तुम साहेब तनके अंदर है ऐसा कहते हो तो वह मिलता क्यो नही । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीको बोले साहेब शरीरके अंदर ही रहता । वह भजन करके उसे रिजानेसे मिलता । बिना रिझाये वह कभी नही मिलता तुम वेष पहनकर बाहर भटक रहे हो । बाहर भटकने से वह नही रिझता फिर तुम भटककर किसको रिझा रहे हो जिस को रिझानेसे तुम्हे साहेब मिलेगा ।।।८३।।

जे तुम कूं साहिब ही चहिये ।। तो घर तज क्यूं भागा ।।
के सुखराम राम तो सारे ।। ठाम ठाम सब जागा ।।८४।।

यदी तुम्हें साहेब ही चाहीये था तो फिर तुम तुम्हारा घर छोड्कर घरसे क्यो भागे(तुम कहते हो राम तो सर्व व्यापी है । फिर वह तुम्हारे घटमे नही था क्या यह तुम क्यो नही समजे ।।।८४।।

बेरागी ।। हम घर छोडया हे सो करमो ओर ग्रभ सें डरतें ।।

मोख जाण के वास्ते ।। घर छोड़ के यह सरणा लेय के । येह बाना लिया है ।।

श्री सुखरामजी म्हाराज ।।

जे तम करम ग्रभ सूं डरियाँ ।। तो बाना क्यूँ धारे ।।
के सुखराम मोख तो जाणो ।। भजन साच के सारे ।।८५।।

बैरागी बोला गृहस्थी कर्मसे गर्भमे आना पड्ता इस डरसे मैने घर छोडा । मुझे मोक्षमे जाना है । गर्भमे नही आना है इसलीये घर छोड्कर यह बाणा पहनकर हरका शरणा लिया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीको बोले तुम गर्भमे ले जानेवाले गृहस्थी कर्मसे डरे इसलीये घर छोडा फिर तुमने यह बाणा किसलीये धारण किया तुम बिना बाना पहने परिवार छोड्कर हरदमके कपडोमे रहते थे । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीसे बोले की मोक्षमे जाना तो रामजी मे विश्वास रखकर भजन करनेमे है बाना पहनकर शरणा लेनेमे नही है ।।।८५।।

बेरागी ।। हम घर बार गोत कटूंबा छोड़ के ।।
उसका सरणा लिया हे ।। अब बाकी क्या रया ।।

श्री सुखरामजी म्हाराज ।।

साहिब जिकि जायगाँ मेल्यो ।। सो जागाँ तज दीवी ।।
के सुखराम न्याव ओ सुणियो ।। केत सरण हम लीवी ।।८६।।

बैरागी बोला हमने घर बार गोत्र कुटुम्ब परिवार छोडा हर का शरणा लिया अब हमारा मोक्ष मे जानेका बाकी क्या रहा । साहेब ने तुझे जिस गृहस्थी जगह पे भेजा वह जगह तो तुने त्याग दी और अपने मन मत से बैरागी बनकर साहेब का शरणा लिया समजकर भटक रहा है । तु सतज्ञान के न्यायसे समज की तूने साहेब का शरणा लिया या साहेब के गुन्हे बांधा है ।।।८६।।

कर्ता हात बणाई चीजां ।। सो साहेब को बानो ।।
के सुखराम मिनख कर पेरे ।। सो गुण देहे बखाणो ।।८७।।

कर्ताने अपने हाथसे पांच तत्वके देहकी जो जो चीज बनाई वह अस्सल बाना कर्ताका बाना है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीसे बोले की जो मनुष्य अपने हाथसे बनाकर बाना धारण करता है वह बाना तो मायाके चिजोसे बनाया हुवा बाना है । उसमे कर्ता का गुण नही है । उसमे सभी माया के गुण है ।।।८७।।

हर को भेष राम को बानो ।। तो आ देहे कुवावे ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। सांग प्राण ले आवे ।।८८।।

हरका वेष याने रामका बाना तो यह शरीर है । बैरागी यह शरीरके उपरका बाना मनुष्य अपने मनसे धारण करता है व कर्ता से पाया हुवा कुद्रती बाना नही रहता है ।।।८८।।

सब पेराण भेष सुण बानो ।। ओ मन देहे बणाया ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। राम भेष तन भाया ।।८९।।

सब पेहराव और वेष और बाना पहनना,यह मन ही देह पर(शरीर पर)सोंग करता रहता, बैरागी सुन,राम का वेष तो यह शरीर है । (अपने हाथ से शरीर पर सोंग लेना है वह राम का न होते,मनका है । शरीर पर कोई अपने हाथ से,आँखो की जगह कान,हाथ की जगह पैर या पैर के जगह हाथ लगाकर,बाना नही बदल सकते,क्यो की,यह रामजी के घर का बाना है । कानमे मुद्रा डालना,गलेमे लिंग डालना,मुखपे पट्‍टी बांधना,शेंडी काटना,सुनता करना,जानवे पहनना जटा बढाणा,शरीर को राख लगाना,बडे बडे टिले निकालना,गले मे माला डालना इ.मन से किये हुवे वेष है ।)।।८९।।

बेरागी ।। हम भेष लिया हे ।। जब लोग हमारे कुं, हरि जन बोलते हे ।।
दूसरों को तो हरजन कोई नही बोलत ।।

सुखरामजी म्हाराज ।।

अब तम भेष पेहर हुवा हर जन ।। क्हो साहिब की बाताँ ।।
के सुखराम क्हाँ सुं आया ।। कोण दिसा अब जाता ।।९०।।

बैरागी बोला हमने वेष लिया है तब लोक हमे हरीजन कहते दूसरे किसी को तो,हरीजन कोई कहता नही । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा अब तुम वेष लेकर हरिजन हुये तो अब उस साहेब की बाते बोलो । तुम कहॉ से आये और अब कौनसी दिशा से जा रहे हो । ।।९०।।

बैरागी ।। हम ब्रम्ह में से आए है ।। और उसी साहेब से जाकर मिले है।

सुखरामजी म्हाराज ।।

साहिब मिल्या के नाँय गुसांई ।। कन आसा मुख ड्रोलो ।।
के सुखराम झूट नही केणा ।। साच सब्द मुख बोलो ।।९१।।

बैरागी बोला हम ब्रम्हमे से आये है और उसी साहेबसे जाकर मिले है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,अरे गोसावी तुम्हे साहेब मिला है या साहेब मिलेगा इस आशाके भरोसे तुम भटक रहे हो । हे गोसावी तुम मेरे से झुठ मत बोलो सच्चा सच्चा मुखसे बोलो ।।।९१।।

बेरागी मिलिया राम हमारे ताँई ।। साँसा रहया न कोई ।।
सुण सुखराम कहे बेरागी ।। हम अर राम न दोई ।।९२।।

बैरागी बोला राम तो मुझे मिल गया है इसमे कोई संशय नही रहा,तो तुम सुनो,मै और राम कुछ अलग-अलग नही (राम और मै तो,एक ही हुँ) ।।९२।।

सुखरामजी ।।

कहो अब आप कूण बिध मिलिया ।। सो मुझ भेद बतावो ।।
के सुखराम बाहिर कन मांही ।। कन ग्यान करे हर गावो ।।९३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागी से बोले तुम कौनसी रीतीसे राम को मिले हो यह भेद मुझे बतावो । रामजी को घट के बाहर मिले हो या घट के अंदर मिले हो या संतो

का ज्ञान सुनकर हरी मिला यह समझकर बैठे हो यह मुझे बतावो ।।।९३।।

बारे मिले तके नही मानू ।। ग्यान मुक्त नही आरी ।।
क्हे सुखराम तन मे मिलिया ।। सो बिध कहो बिचारी ।।९४।।

तुम्हे रामजी बाहर मिले है यह बात मै मानता नही और तुम ज्ञान से मुक्त हुये होंगे यह बात भी मुझे कबुल नही। यदी शरीर मे मिला है तो वह विधी मुझे विचार करके बतावो ।।।९४।।

कुण अस्थान खेचरी मुद्रा ।। क्हां चाचरी जागे ।।
के सुखराम उन्मनी सामी ।। किसे देस मे लागे ।।९५।।

हे बैरागी शरीरमे खेचरी चाचरी और उन्मुनी मुद्रा कहाँ जागृत होती उनके अलग-अलग देश बतावो ।।।९५।।

क्हो भूचरी क्हो चाचरी ।। कहो अगोचर सोई ।।
के सुखराम खेचरी कहिये ।। कहाँ उनमुनि होई ।।९६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागी से बोले खेचरी चाचरी उन्मुनी के साथ भुचरी अगोचरी इन मुद्राके भी स्थान बतावो ।।।९६।।

बेरागी ।। तुम ही कहो ।। सुखरामजी ।।

मुख अस्थान खेचरी मुद्रा ।। हिरदे भूचरी जागे ।।
के सुखराम अगोचर नाभी ।। त्रुगुटी उनमुनि लागे ।।९७।।

बैरागीने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तुम ही बोलो ऐसा कहा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने कहॉ खेचरी मुद्रा मुखके कंठ स्थानमे लगती तो भुचरी हृदयमे अगोचरी नाभी मे और उन्मुनी त्रिगुटी मे लगती ।।।९७।।

मुद्राँ ज्हाँ चाचरी जागे ।। अणभे ग्यान प्रकासा ।।
सगोचरी समाद पहूँचे ।। द्वार दसवाँ बासा ।।९८।।

जब चाचरी मुद्रा जागृत होती तब कालके परेके अणभे देशका ज्ञान घटमे प्रकाशता सगोचरी मुद्रा लगनेपे हंस दसवेद्वार मे समाधी देश मे पहुँचता ।।।९८।।

मन खेचरी चित्त चाचरी ।। साच भूचरी होई ।।
के सुखराम ऊनमुनि सासा ।। तत्त अगोचर लोई ।।९९।।

खेचरी मन मे चाचरी चित्तमे भुचरी विश्वासमे उन्मुनी सांस मे और अगोचरी मुद्रा तत्व मे है । ।।९९।।

ग्यान खेचरी अरथ चाचरी ।। समज भूचरी जाणो ।।
के सुखराम अगोचर लिव हे ।। तलब उनमुनि ठाणो ।।१००।।

खेचरी मुद्रा ज्ञानसे,चाचरी मुद्रा अर्थ मे,भुचरी मुद्रा समज मे,अगोचरी मुद्रा लिव मे और उन्मुनी मुद्रा तलब में है ।।।१००।।

जाब खेचरी परस चाचरी || समझ भूचरी जाणो ||
के सुखराम पांचवी सर्वण || चख उनमुनि ठाणो ||१०१||

जबाब करना खेचरी,परसना चाचरी समजना भुचरी पाचवी मुद्रा कानमे,उन्मुनी मुद्रा आँखो के जगह है |||१०१||

भजन खेचरी ध्यान उनमुनि || सूंता अगोचर गाऊं ||
के सुखराम चाचरी बिरह || भरम भूचरी ढाऊँ ||१०२||

भजन खेचरी,ध्यान करना उन्मुनी,सत्ता अगोचरी मुद्रा मे है,चाचरी मुद्रा विरह है और भ्रमको गिराना भुचरी मुद्रा है |||१०२||

मुद्रा पांच चित्त कर साझे || सो जोगी हर पावे ||
के सुखराम प्रम पद परसे || उलट आद घर जावे ||१०३||

जो योगी यह पाँचो मुद्रा चित्त लगाकर साधेगा उसे हर मिलेंगे । वह जोगी घटमे बंकनाळ के रास्ते से उलटकर परमपद उस आदि घर जायेगा |||१०३||

अे मुद्रां स्वामी म्हें भाखी || भांत भांत कर सारी ||
के सुखराम सुणो बेरागी || पांच फेर हे न्यारी ||१०४||

हे स्वामी मैने ये पाँचो मुद्रा अलग अलग करके तुम्हे बताया हुँ । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीसे बोले इन मुद्राओसे सिवाय पाँच और भी मुद्रा है |||१०४||

ज्यांरी ममता मॉय मुई हे || ग्यान पूत सो जाया ||
के सुखराम पाँच वे मुद्रां || सोई लखेंगे भाया ||१०५||

जिनकी ममता मरी होगी व जिसे ज्ञानका पुत्र जन्मा होगा उसेही यह पाँच वी मुद्रा समझेगी । ||१०५||

अब में कहुँ सुणो बेरागी || अरथ आप ओ कीजे ||
के सुखराम कंवळ हे केता || सोज जाब ओ दीजे ||१०६||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने बैरागीसे कहा घटमे कमल कितने है इसका ज्ञान आप करो |||१०६||

कहो सब कंवळ पांख सब बरणो || धाम बतावो सारा ||
के सुखराम नही तो सामी || छाड़ो भेष तुमारा ||१०७||

यह सब शरीर के कमल बतावो और कौन से कमल को कितनी पाकलीयाँ है यह वर्णन करो । शरीर मे कमलोका स्थान बतावो । आदि सतगुरु सुखरामजी बैरागीसे बोले यदी तुमसे यह बताया नही जाता तो स्वामी यह तनपे पहन रखा हुवा वैरागीका वेष त्याग दो |||१०७||

कोण बात सूं मोख पहूँचे || क्हां किया हर रीजे ||
के सुखराम सुणो बेरागी || जाब भेद ओ दिजे ||१०८||

किस बात से मोक्ष पहुँचते हो व किस बात से हर खुश होता है इसका जबाब और भेद मुझे बतावो ।।।१०८।।

बेरागी तुम ही कहो ।। सुखरामजी म्हाराज ।।

लिव बंध भजन मोख कूं पोंचे ।। साच कमाया रीजे ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। भेद नाव रट लीजे ।।१०९।।

बैरागीने कहा तुम ही कहो तब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने कहा की लिव लगाकर भजन करनेसे जिव मोक्षको पहुँचता है व सतगुरुसे विश्वास रखनेसे हर खुश होता है इसप्रकार सतगुरुसे विश्वाससे भेद लेकर लिव लगाकर नाम भजन करनेसे मोक्ष मिलता है ।।।१०९।।

पेऱ्यो भेष भेदले सामी ।। कोण पेर पद पाया ।।
के सुखराम अरथ ओ दिजे ।। पछे ग्यान कर भाया ।।११०।।

तुमने यह वेष लिया वह भेद लेकर बाद मे लिया क्या(या भेद मिलने के पहले लिया)और वेष लेनेसे तुमको कौनसा पद मिला,तो पहले इसका अर्थ बतावो और बादमे तुम्हारा ज्ञान बताओ । ।।११०।।

पेऱ्याँ पछे भेद जो पायो ।। तो भंवता क्युं भाया ।।
के सुखराम पेल जो समझ्यो ।। तो कांय गोत तज आया ।।१११।।

वेष पहनने बाद यदी तुम्हे रामजी मिले है तो अब जगत से भटककर क्यो भ्रमण करते हो कोई एखाद जगह बैठकर भजन कर लो और यदी रामजी मिलने का भेद पहले ही मिल गया था तो गोत्र छोड्कर बैरागी क्यो हुये हो ।।।१११।।

भेष पेल जे भेद मिल्या था ।। तो क्यूँ कुळ कूं छिटकाया ।।
के सुखराम पछे जे समझ्या ।। तो काँय भंवे जुग भाया ।।११२।।

तुमने वेष लिया उसके पहले यदी तुम्हें भेद मिला था तो तुमने तुम्हारे कुल को क्यो छोडा और वेष लेनेपर रामजी समझे हो तो अब जगत मे भ्रमण करके क्यो भटकते हो ।।।११२।।

बेरागी ।। तुम हि कहो ।। सुखरामजी म्हाराज ।।

समझ्याँ पछे भेष यूं पेऱ्यो ।। मांग खाण के तांई ।।
के सुखराम जक्त मे डोल्याँ ।। मोहो लगे जग नाही ।।११३।।

बैरागी बोला,तुम ही कहो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने बैरागीसे कहा की,समजने के बाद वेष धारण किया है तो तुमने सिर्फ भीक माँगकर खानेके लिये किया है और किसी स्त्री से मोह लगे नही इसलीये भ्रमण करते हो ।।।११३।।

बेरागी ।। हम मांग खाणे कुं भेष नही लिया हे ।।
लोगो कुं प्रम भेद बताते फिरते हे ।। मोहो लगणे के डरसे हम नही फिरते हे ।।
प्रम भेद के वास्ते हम ने भेष लिया हे ।। सुखरामजी ।।

सुण बेरागी बात हमारी ।। प्रम भेद कहे भाई ।।
के सुखराम नही तो सामी ।। ऊठयाँ राम दुहाई ।।११४।।

बैरागी बोला मैने माँग खाने के लिये वेष नही लिया है । परमभेद के वास्ते हमने वेष लिया है । लोगो को मोक्ष का उपदेश देने के लिये भेद बताते फिरता हुँ । किसी स्त्रि से मोह लगनेके उरसे हम नही फिरते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने बैरागी से कहाॅ तुम परमभेद कहते हो वह परमभेद मुझे बतावो । बिना परमभेद बताये तम उठके निकले तो तुम्हे रामजीकी कसम है ।।।११४।।

बेरागी ।। प्रम भेद प्रम भेद छुछम मंत्र हे ।। सुखरामजी ।।
मंत्र छुछम कहो बेरागी ।। के ग्रहस्थ हो जावो ।।
जन सुखराम ग्यान सूं बूझे ।। नांव को नांव बतावो ।।११५।।

बैरागी बोला परमभेद यह सुक्ष्म मंत्र है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले यह परमभेद का सुक्ष्म मंत्र तुम मुझे बतावो नहीं तो तुम फिरसे गृहस्थी हो जावो । मै तुम्हे ज्ञानसे पुछ्ता हुँ की इस सुक्ष्म मंत्र के नाम का नाम क्या है यह बतावो ।।।११५।।

बेरागी ।। तुम ही कहो ।। सुखरामजी ।।
छुछम मंत्र सांस दम माही ।। बिन जिभ्या मन जाणे ।।
के सुखराम द्वादस ऊपर ।। पूरा संत पिछाणे ।।११६।।

बैरागी ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से कहा तुम ही बोलो । आदि सतगुरु सुखरामजी महराज ने बैरागी को कहा की यह सुक्ष्म मंत्र श्वास मे है । जिव्हा के सिवाय इसे मन जाणता है । यह सुक्ष्म मंत्र बारह कमलोके उपर पहुँचने पे देह मे प्रगटता है । जो संत बारह कमल छेदकर दसवेद्वार पहुँचते है वे ही इस सुक्ष्म मंत्र को जाणते है ।।।११६।।

राम नांव को नाव कहिजे ।। कांय साध पद छाड़ो ।।
के सुखराम पवन किण टेके ।। सोझ अरथ सो काढो ।।११७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागी को बोले की,तुम रामनामका नाम बतावो तुम रामनाम का नाम नही बता सकत हो तो साधूपण त्याग दो और तुम श्वास किसके आधार से है उसको खोजकर बतावो ।।।११७।।

बेरागी ।। तुम ही कहो ।। सुखरामजी वाच ।।
राम नांव को नांव सांस हे ।। पवन सुता के टेके ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। सुता परे हर देखे ।।११८।।

बैरागी बोला आप ही बतावो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले राम नाम का आधार श्वास याने पवन है व श्वास याने पवन सत्ताके आधार से है । उस सत्ताके परे हर है यह समजो ।।।११८।।

पवन बिना सब्द हे केता ।। पुरष कहो बिन पाणी ।।
के सुखराम अरथ ओ दीजे ।। पछे कथ तुम बाणी ।।११९।।

पवन के बिना कितने शब्द है और पानी के बिना कितने पुरुष है यह कहो । हे बैरागी इसका अर्थ कहकर फिर तुम्हे अपनी वाणी कहनी है तो कहो ।।।११९।।

बेरागी ।। तुम ही कहो ।। सुखरामजी वाच ।।

पवन बिना सब्द हे दोई ।। सात पुरष बिन पाणी ।।
के सुखराम प्रम पद यां सूं ।। पेला परे पिछाणी ।।१२०।।

बैरागी बोला,आप ही कहो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने बैरागी से कहा की,इस पवनके आधार बिना दो शब्द है व पानी के आधार बिना सात पुरुष है । इस दो शब्द व सात पुरुष के आगे परमपद है यह पहचानो ।।।१२०।।

कुण कुण सबद पवन बिन कहिये ।। किसा पुरष बिन पाणी ।।
के सुखराम सुणो बेरागी ।। बोलो तत्त पिछाणी ।।१२१।।

कौन कौन से शब्द पवन के बिना है । कौनसे सात पुरुष पानी के बिना है वह बतावो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागी से बोले वे तत्व पहचान के कहो ।।।१२१।।

बेरागी वाच ।। तुमही कहो ।। सुखरामजी वाच ।।

उलटर चड़े अनाहद गाजे ।। बाय बिना अे कुवाया ।।
के सुखराम प्रम पद यां सूं ।। आठ मजल हे भाया ।।१२२।।

बैरागी बोला–आप ही कहो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले वायु के बिना यह दो शब्द है वह एक एक उलटकर चढनेवाला और दुसरा अनहद नाद होता वह ऐसे यह दो शब्द वायु के बिना है । परमपद इसके भी आगे आठ मजल(आगे)है । और पानी के बिना सात पुरुष यह ऐसे है ।।।१२२।।

अबगत सुन्न मुन्न सुण बाई ।। तेज निरंजन जाणो ।।
के सुखराम बीज बिन जळ हे ।। अे पुरष सात बखाणो ।।१२३।।

अविगत,शुन्य,मुन्न,वायु,तेज,निरंजन ये सात पुरुष पानी के बिना है ये सात पुरुष पानी उत्पन्न होने के पहले उत्पन्न हुये है ।।।१२३।।

ओरूं कहुँ फेर म्हे सामी ।। कन बूझन सूं धाया ।।
के सुखराम अगम के आगे ।। खोज खबर म्हे लाया ।।१२४।।

और मै तुम्हे क्या बताऊ । तुमने जो जो पुँछा वह मैने तुम्हें बताया ये सभी बतानेपे तुम तृप्त हुये हो या नही । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले मै तो पारब्रम्ह क्या,पारब्रम्ह के अगम के आगे की सतस्वरुप विज्ञान की खोज करके खबर लेकर आया हुँ ।।।१२४।।

बेरागी वाच ।। क्या पूछणा हे ।। सुखरामजी ।।

सोगन तुमे द्राही गुर की ।। कसर राखो मत कांई ।।
के सुखराम बूझ फिर सामी ।। काँय सिष होय जाई ।।१२५।।

बैरागी ने कहा–मुझे कुछ पुछ्ना नही है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने बैरागी को

कहाँ की तुम्हे तुम्हारे गुरु की शपथ है एक तो मुझे कुछ पुछो नही तो मेरा शिष्य बन जावो ।।१२५।

बेरागी ।। तुम ये जो कहते हो सो साच काय परसे मानणा ।।

सुखरामजी म्हाराज वाच ।।

तन मन खोज देखले बारे ।। अखंड जोत हे वाँकी ।।

के सुखराम समझ बिन सामी ।। रूळी बात क्यूँ भाकी ।।१२६।।

बैरागी ने कहा,आप यह जो कहते हो वह आपका कहना सच कैसे समजना ? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागी को बोले की तुम तन मन खोज के देख लो व तन मन के भी परे अखंड ज्योती है वह भी देख लो स्वामी तुम्हे समजता तो नही व बिना समझे बेफिजूल बात क्यो बोलते ।।।१२६।।

बेरागी ।। हम बाना ले के भेष लिया हे सो इस बाना की लाज उसीकुं हे ।। सुखरामजी ।।

सामी सांग भेद बिन असो ।। ज्यूं सेमल बोहो फूले ।।

के सुखराम फेर म्हे भाकूं ।। जक्त काळ मे डोले ।।१२७।।

बैरागी बोला हमने बाना लेकर वेष लिया है उसेही इस बानेकी शरम रहेगी । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्वामी से कहाँ जंगल मे काटसावरी के फुल आते है वे दिखनेमे लाल रंगके सुहावने होते है परंन्तु इनसे आम यह फल कभी नही निपजता इसीप्रकार रामजीके भेदके बिना तुम्हारा बाना याने सोंग है । यह सोंग जगतके नर नारीको दिखनेमे बहोत अच्छा लगता है परन्तु इस सोंगसे किसी नर नारीमे रामजी प्रगट नही होंगे । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बैरागीको बोले जैसा जगत कालके मुखमे डोल रहा है वैसा तुम भी काल के मुख मे डोल रहे हो ।।।१२७।।

कोरो भेष पेरियां क्या व्हे ।। धन बिन बोरा नाही ।।

के सुखराम पार को बिणजे ।। जक्त ठगण के तांई ।।१२८।।

कोई पक्का धनवान सावकार दिखेगा ऐसा सावकार का सोंग पहनके क्या होता है । धन के सिवाय सावकार का सोंग लेनेसे धन का देना लेना नही होता । यह सोंग जगत के भोले लोगोको ठगाने के काम में जरुर आता इसप्रकार तुम्हारे वेषसे कोई मनुष्य रामजी नही पाता व तुमसे ठग जानेके कारण अपना मनुष्य तन गवा देता ।।।१२८।।

बेरागी ।। हमने भेष लिया हे सो हमारा कारज तो आपसे ही हो जायगा ।।

जैसे अगाड़ी साधु संतो और भक्तों का हुवा हे ।। वेसा हमारा भी हो जायगा ।।

सुखरामजी वाच ।।

सामी गरज भेद सूं सरसी ।। सांग धार ब्हो तेरा ।।

के सुखरामजी नांव बिन कोई ।। लंघे पार नही बेरा ।।१२९।।

बैरागी बोला हमनें वेष लिया है तो हमारा कार्य अपने आप आपलमती हो जायेगा । जैसे पहले साधु संतोका और भक्तोका कार्य हुआ है ऐसा हमारा भी कार्य हो जायेगा । आदि

सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,रामजी पाने की गरज तो भेद से पुरी होती साधु का सोंग लेने से नही । मतलब भारी भारी अनेक प्रकारके साधुके सोंग लिये तो भी रामजी नही मिलते । जैसे लकडी के नाव बिना समुद्र पार नही हो सकता वैसेही रामनाम के बिना भवसागर पार नही हो सकता ।।।१२९।।

अरेल ।।

मांही बाहेर अेक होय नही जाणिये ।। ज्यां अंतर व्हे चाय बाहेर सूं आणिये ।।
जेती करे उपाय मांहे के लेण रे । के सुखदेवजी तोय झूट नही केण रे ।।१३०।।

(तू कहता है,जगत में जो ब्रम्ह है,वही ब्रम्ह तुझमें है और मुझमें है,वही(ब्रम्ह)बाहर है ।) सतगुरू सुखरामजी महाराजने कहा,अंदर और बाहर एक है,ऐसा तू मत समझ। जिसके अंदर में,जिस बातकी चाहना है,(वह बात(चिज)अंदर नही हुई,तो वे वह वस्तु),बाहर से लाते,अरे, अंदर में नही हुई तो,बाहर से वस्तु अंदर लेनेके उपाय करता,(तब तक तो तु बाहर और अंदर एक है),ऐसा तेरा कहना झूठ है,(क्यों कि,अंदर में(शरीर में),वस्तु मरी हुई हो तो और अधिक अंदर में दूसरी लेनेके लिए,उपाय क्यों करता था,तो अंदर और बाहर एक ही है,ऐसा मत कह ।) ।।१३०।।

मून गहयां क्यां होय मँन मे घात हे ।। नेळ हुवो धर ध्यान मछी चुण खात हे ।।
साखी सब्द लिखाय बाच क्या पाय रे । अरे हाँ बिन सिंवरण सुखराम नरक में जाय रे । ।१३१।

उपर से मौन लेनेसे,क्या होता है,मन में तो घात है,(उपर से मौन लिया,तो ये ऐसा है),जैसे नैल(बगला)ध्यान धरके,खडा रहता,(आँखे बंद करके,साधु जैसा बनता),परंतु मछली(देखते ही,उसे)चुनकर खा जाता। तुने पहले के संतों की साखी(शब्द),पद लिख लिए है,वह पढकर, उसमें तुझे क्या मिलेगा। तु सुमिरन किए बिना,नर्कमें जायेगा,ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज ने कहा। ।।१३१।।

साखी सब्द लिखाय ज्ञान ब्हो सिखिया ।। अब मार्‍यो पुस्तक काख जक्त मे भीखीया ।।
वेदे ओरां कूँ ज्ञान आप बिष खाय हे । अरे हाँ सो कपटी,सुखराम नरक मे जाय हे।१३२।

तुने(पहले के संतोकी बताई हुई)साखी और शब्द लिख लिए और बहुत सा ज्ञान सिख लिया,अब तु किताब बगल में लेकर,जगत में घुमता है। दुसरोंको तो ज्ञान बताता है और स्वंयम विष(विषयरस)खाता है। वे कपटी है,वे कपट के योग से,नर्क में जायेंगे। ।।१३२।।

फिर फिर सीखे साख अड़न के काज रे । नही भक्त की चाय नरक की लाज रे ।
सुण ज्ञानी बेईमान जग मे जाणिये । अरे हाँ वां सूं सुण सुखराम प्रीत नही ठाणिये ।१३३।

घुम-घुमकर,तु ज्ञान सिख रहा है,वह ज्ञान दुसरोंको अडाने के लिए,(वाद-विवाद करने के लिए)सिखता है। तुझे भक्ती(पदवी)तो कुछ भी चाहना नही और नरक में जाने की, तुझे लाज नही,(सिर्फ वाद-विवाद करने के लिए,तु ज्ञान सिखता है और साखी,शब्द,पद इत्यादीयों का संग्रह करता है),अरे,ये ऐसे जगतके ज्ञानी,सब बेईमान है,ऐसा समझना।

ऐसे ज्ञानीयों से प्रीती नही करना,ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज ने कहा। ।।१३३।।

खूब बणायो भेष ज्ञान ब्हो सीखिया । के तीरथ किया अनेक धाम ब्हो भीखिया ।
सब सुध लावी सोध नांव दिस पूढ हे । अरे हाँ तब लग के सुखराम सरब बिध झूट हे ।। ।१३४।

तुने,खुब अच्छी तरह से,समझ के वेष किया और ज्ञान बहुत सा सिख लिया और अनेक तीर्थ किए,धाम किए(बद्रिनाथ,जगन्नाथ,रामनाथ,द्वारका)बहुत घुमता रहा,यह सभी सुध्दि (समज)खोज ली,परंतु राम नाम के तरफ ,तेरी पिठ है। (राम नाम स्मरण करना,पिछे छोड दिया),तब तक तेरी कि हुई,सब विधी झुठी है । ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज ने कहा ।।१३४।।

ओ मोसर दिन आज ब्होर नही पाय रे ।। चेत सके तो राम गुण गाय रे ।।
फिर रे लो पिस्ताय तन ओ छूटसी ।अरे हाँ बिन सिंवरण सुखराम जंम तुज लूटसी ।१३५।

यह ऐसा अवसर और आज के जैसा दिन,तुझे फिर से,कभी भी नही मिलेगा। अब तु होशियार हो सकता,तो तु होशियार होकर,राम नामका भजन कर। बाद में पस्तावा करेगा। क्यों की, यह शरीर छुट जायेगा और स्मरण किए बिना,यम तुझे(तेरे इस शरीर को)लुट लेगा(और तुझे ले जायेगा),ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज ने कहा। ।।१३५।।

चलत न दीसे नांव बधंती देह रे ।। जात न दीसे आव भरंती खेह रे ।।
आई भजन की रीत साध की बात हे । अरे हाँ बिन सत्तगुर सुखराम लखी नही जात हे ।।१३६।।

जैसे पानी में नाव चलते समय,नाव चल रही है,ऐसा दिखता नही,उसी प्रकार से,यह देह बढ रहा है,(वह दिनपर-दिन बढता,परंतु हर-रोज कितना बढा,यह)दिखता नही,वैसे ही,यह अपनी आयु,जाते हुए दिखती नही। वैसे ही धुल आकर शरीरपर और घर में गिरती,परंतु गिरते समय दिखती नही),(परंतु वह धुल जम जाती,वह झाडु लगाने से,मालुम पड्ता,परंतु गिरते समय दिखती नही),ऐसेही भजन की रीत है। (थोडा-थोडा भी भजन किया,तो भी संग्रह हो जाता है।)ऐसे ही साधु की बात है। (थोडा-थोडा किया,तो भी उसका संग्रह होता), परंतु सतगुरूके बिना,यह चीज समज में नही आती,ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते । ।।१३६।।

छाड जक्त को नेह निंरजण गायरे ।। बिन भक्ती नर चेत चोरासी जाय रे ।।
तुज जनम जनम दु:ख होय पार नही पावसी । अरे हाँ बिन सिंवरण सुखराम धक्का ब्हो खावसी ।१३७।

अब तु,इस जगत का स्नेह छोडकर,निरंजन की भक्ती कर। तु चैत्यन्न(हुशार)हो,भक्ती किए बिना,तु चौराशी योनी में जायेगा। आगे तुझे(वैरागी),जनम-जनम में दु:ख होगा,उस दु:ख का, कोई वार-पार नही आयेगा। तु स्मरण किए बिना,बहुत तरह के धक्के खाएगा,ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज ने कहा ।।१३७।।

बाळक हुवाँ जवान ।। तबे सब मानसी ।। गयाँ किराडे नांव हरक सब जानसी ।।
यूँ जन कूं सेंसार लार सूं मानसी ।। अरे हाँ देहे छतां सुखराम भेद गी जानसी ।।१३८।।

छोटा बच्चा,जवान(युवा)होनेपर,उसे सब लोग(जवान)मानेंगे। वैसे ही किनारे पर(तीर पर) नाव जानेपर,सब को हर्ष होगा। ऐसे ही जन को(संत को),संत जैसा(जगतके)लोग बाद में मानेंगे ।(परंतु देहसहित संत,जगत में रहता,तब तक,उससे भेद भाव ही लोग जानते)और बाद में उसके पिछे से(उसके जानेके बाद),लोग उसे मानते,ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है। ।।१३८।।

बेरागी रीस मान ऊठ मुरडाय चाल्यो गयो ।। कुंडल्यो ।।

चरचा में सुखराम के ।। जे जन माने रीस ।।
सो नुगरो गुर बाहेरो ।। मूरख बिश्वा बीस ।।
मुरख बिश्वा बीस ।। ढोर सुंइ ढोर कहावे ।।
जे ज्ञान करत के मांय ।। ऊठ मुरड़ायर जावे ।।
सो नर नरकाँ जावसी ।। सिंवरन ही जग दीस ।।
चरचा मे सुखराम के ।। जे जन माने रीस ।।१३९।।

(तब बैरागी,गुस्सेसे आकर,उठकर,वहाँ से भाग गया),तब सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले, ज्ञान की चर्चा करने में,जो जन गुस्सा लाता,वह नुगरा है,उसको गुरु मिला नही,बिन गुरु का, वो बीस–बीसवे,मुर्ख है,वह जानवर से भी जानवर है,कि,जो ज्ञानकी बात करते समय भी, सुनकर ऐट से उठकर चला जाता,वह मनुष्य यदी,जगदिशका भी स्मरण करता हो,तो भी वह नरक में जायेगा,क्यों कि उसने,ज्ञानकी चर्चा करने में,क्रोध लाया,(किया ।) ।।१३९।।

|| इति बैरागी के संवाद का भाषांतर संपूर्ण ||